प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

पंतनगर ने अधिक लौह तत्व वाला गेहूँ उगाने की तकनीक विकसित की

पंतनगर। २६ मार्च, २०१८। विश्वविद्यालय के विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय में चल रहे जैव तकनीक कार्यक्रम के अंतर्गत वैज्ञानिकों ने मनुष्य में होने वाली रक्त की कमी की बीमारी, एनीमिया, से बचाव के लिए लौह तत्व-युक्त गेहूं को उगाने की नैनो तकनीक पर आधारित आसान तकनीक का विकास करने में सफलता पाई है। आयरन-बायोफोर्टीफिकेशन नाम की इस तकनीक के द्वारा गेहूं में आयरन (लौह तत्व) की मात्रा ४५ प्रतिशत तक बढ़ जाती है, जो कि देश में एनीमिया की रोकथाम के लिए एक कारगर कदम साबित हो सकता है।

इस तकनीक में गेहूं के बीजों को बुवाई से ठीक पहले आयरन-नैनो कणों के एक निश्चित विलयन में कुछ घंटो के लिए भिगोया जाता है, जिसके फलस्वरूप बीजों में उपस्थित आयरन अपटेक तंत्र क्रियाशील हो जाता है और उगने के पश्चात पौधे को अधिक आयरन उबलब्ध कराता है। आजकल की भागदौड़ भरी जिन्दगी में अपने खान-पान पर सही ध्यान न दे पाने के कारण शरीर में पोषक तत्वों की कमी हो जाती है और शरीर में लाल रक्त कण (रेड ब्लड सेल्स) बनने कम हो जाते हैं, जिसके कारण एनीमिया की शिकायत हो जाती है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य सर्वे में उत्तराखंड में लगभग साढ़े आठ लाख स्कूली छात्रों में एनीमिया की शिकायत पाई गई है। बच्चों में एनीमिया दूर करने के लिए राज्य के स्कूलों में आयरन फोलिक एसिड की गोलियां बांटने के आदेश दिए गए हैं। पंतनगर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक पिछले कई वर्षों से एनीमिया की रोकथाम के लिया शोध कार्य कर रहे हैं जिसके फलस्वरूप डॉ. अनिल कुमार की शोध टीम द्वारा विश्वविद्यालय ने एनीमिया से बचाव के लिए आयरन-युक्त गेहूं को उगाने की इस आसान तकनीक का विकास करने में सफलता पाई है।

अगले चरण में इस तकनीक का किसानों के खेतों में बड़े पैमाने पर ट्रायल किया जायेगा। इस तकनीक का इस्तेमाल करके किसान भी बड़ी आसानी से आयरन-युक्त पोषक गेहूं उगा सकते हैं, जिसका बाजार में सामान्य गेहूं की अपेक्षा अच्छा मूल्य मिलेगा। आजकल खाद्य-प्रसंस्करण (फूड-प्रोसेसिंग) की कम्पनियाँ उच्च गुणवत्ता युक्त गेहूं को किसानों से सीधे भी खरीद लेती हैं जिससे किसानों को उनकी उपज का बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होता है। पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गयी इस तकनीक का पेटेंट फाइल किया जा चुका है। इस तकनीक के विकास के लिए पंतनगर विश्वविद्यालय को महिंद्रा समृद्धि इंडिया एग्री अवार्ड्स २०१८ से पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया जिसके फलस्वरूप विश्वविद्यालय को एक लाख ग्यारह हजार रुपये धनराशि के साथ प्रशस्ति-पत्र एवं ट्रॉफी भी प्रदान की गयी।